

कॉर्न या कैलोसिटी

> डॉ. मनीषा सिंह

आप जानते ही होंगे कि मधुमेह के रोगियों में पैरों की सुरक्षा का बहुत महत्व है। हमारे पैर प्रकृति की वह देन हैं जो हमें चलायमान रखती हैं। प्रकृति ने पैरों को इस तरह बनाया है कि हम घंटों ऊबड़-खाबड़ ज़मीन, सीढ़ी एवं समतल पर आसानी से चल सकते हैं। हमारे पैरों में ऐसी व्यवस्था है, कि शरीर का वज़न निरंतर एक ही बिन्दु पर न रहते हुये दबाव अलग-अलग भागों में बाँट देता है। इसके लिये एक स्वस्थ एवं कारगर स्नायु तंत्र (Nervous System) की आवश्यकता होती है, जो दबाव बिन्दु महसूस कर दबाव बिन्दु परिवर्तित करता रहे।

लम्बे समय तक अनियंत्रित मधुमेह रहने से स्नायु तंत्र पर इसका असर पड़ता है, और इस स्थिति को हम न्यूरोपैथी कहते हैं। न्यूरोपैथी के बढ़ने पर मरीज़ दबाव बिन्दु एवं दर्द महसूस नहीं कर पाता। पैरों के कुछ भागों में निरंतर शरीर के वज़न से दबाव पड़ने, जूतों से चमड़ी पर होने वाले घर्षण एवं पैरों में खून का संचालन कम होने से पैर की चमड़ी में कई प्रकार के बदलाव आने लगते हैं। चमड़ी सख्त, मोटी एवं खुश्क होने लगती है। दबाव बिन्दुओं पर इस प्रकार



के चमड़ी में होने वाले परिवर्तनों को कॉर्न या कैलोसिटी कहते हैं।

बेहद सख्त होने पर ये कैलोसिटी किसी पत्थर की तरह पैरों में अंदर की तरफ घाव पैदा कर सकती है एवं इन घावों में मवाद भी पड़ सकती है। यही पैरों के गंभीर रोगों की शुरुआत होती है, जो आगे चलकर गेंग्रीन एवं पैर काटने की नौबत तक पहुँचा सकती है।

किन बीमारियों में ज्यादा बनते हैं कॉर्न या कैलोसिटी :-

1. मधुमेह, जैसा कि हमने अभी बताया
2. आर्थराइटिस, गठिया के मरीज़ जिनमें जोड़ों की विकृति हो जाती है।

3. न्यूरोपैथी पैदा करने वाली अन्य बीमारियाँ जैसे-सिफिलिस, हायपोथायराइडिज़्म आदि।
4. चर्म रोग जैसे सोरयासिस।

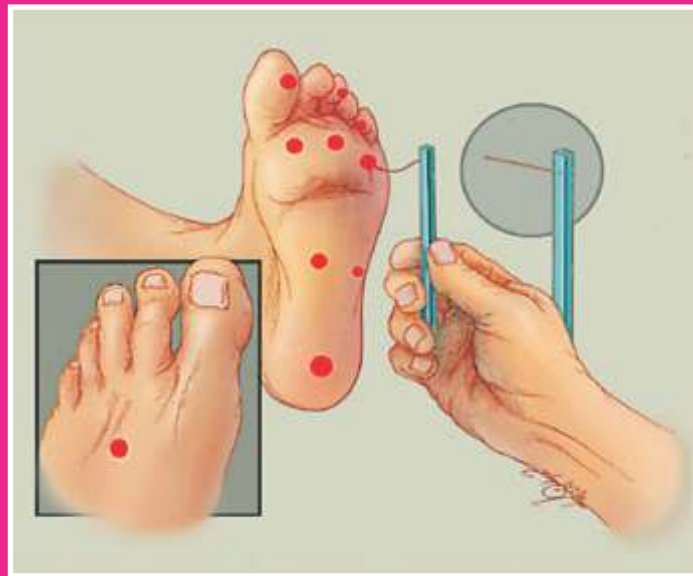
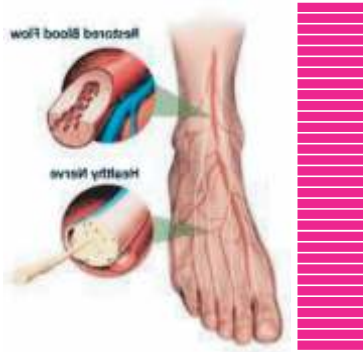
पैरों में कहाँ बनते हैं कॉर्न या कैलोसिटी :-

1. पैर के अंगूठे के अंदरूनी एवं अँगूठे की जड़ पर जहाँ चलते समय काफी वज़न पड़ता है।
2. पैर की उंगलियों के छोटे जोड़ों के ऊपर जूतों से होने वाले घर्षण के कारण।
3. छोटी उंगली के बाहरी भाग पर जूतों से होने वाले घर्षण के कारण।
4. टखने की हड्डी पर दिन भर ज्यादा देर तक पाल्थी मारकर बैठने वाले लोगों में।
5. पैर में किसी भी भाग पर विशेषकर जब न्यूरोपैथी की वजह से पैर के आकार में विकृति पैदा होने लगे।



क्या हैं कॉर्न या कैलोसिटी के लक्षण :-

1. न्यूरोपैथी की वजह से अधिकांश मरीजों में कोई लक्षण नहीं होते क्योंकि पैर सुन्न रहते हैं।
2. कॉर्न में तीव्र चुभन या किसी नुकीले पत्थर पर चलने जैसा आभास हो सकता है, जो चलने पर ज्यादा ओर बैठने पर कम हो जाता है। इसकी वजह से मरीज की चाल प्रभावित हो सकती है।



3. इनके ऊपर की चमड़ी बदरंग, सख्त एवं खुरदरी लगती है व इसमें दरारें भी पड़ सकती हैं।

4. कभी-कभी इनमें लगातार दर्द व जकड़न भी हो सकती है।

5. कॉर्न या कैलोसिटी की दरारों में अथवा आसपास खून या मवाद का रिसाव भी हो सकता है।

6. यही घाव आगे जाकर विकराल रूप लेकर पैरों को सड़ने की अवस्था (गेंग्रीन) तक पहुँचा सकते हैं।

कैसे करें बचाव

एवं उपचार :-

1. सही नाप के जूते पहनें, जूते अंदर से नर्म एवं मुलायम हों।
2. जूतों का पैतावा (Insole) पी.यू. फोम (P.U. Foam) का बना हो तो अच्छा है।
3. जूतों का अग्र भाग चौड़ा हो जिससे पैर के अंगूठे एवं उंगलियों पर दबाव न पड़े।
4. नंगे पैर न चलें।
6. हवाई चप्पलों एवं टाइट जूतों का प्रयोग कतई न करें। नहाने के बाद पैरों को सुखाकर वैसलीन या नमी युक्त क्रीम लगायें।
7. कॉर्न को अपने आप ब्लेड या चाकू से कतई न काटें, इसके लिये विशेषज्ञ की मदद लें।
8. कॉर्न के ऊपर कार्न कैप जैसे घरेलू उपचार न करें।
9. रोज़ाना पैरों को अच्छी तरह देखें। चमड़ी में आने वाले किसी भी परिवर्तन को गम्भीरता से लें। विशेषज्ञ सर्जन कॉर्न एवं कैलोसिटी को बिना घाव बनाये निकाल सकता है। उपचार में उनकी मदद लें। ●●●